॥ भगवान वृषभदेव पंचकल्याणक महामहोत्सव ॥

तथा विश्वशांती महायाग

(बुधवार, दि. ११ डिसेंबर २०२४ से रविवार, दि. १५ डिसेंबर २०२४)

स्मरणिका

श्री 1008 युगप्रवर्तक
आदिनाथ तीर्थंकर भगवान 11 फिट जिनबिंब

श्री १००८ भ. महावीर दिगंबर जिन मंदिर

शिखरस्थ सिहासनोपरी
श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर जिनबिंब

श्री १००८ भ. महावीर दिगंबर जिन मंदिर (श्री. भगवान महावीर अहिंसा ट्रस्ट) निगडी, प्राधिकरण, पुणे - ४११०४४.

स्मरणिका संपादकीय समिती

समिती अध्यक्ष

- श्री. धनंजय चिंचवडे

समिती उपाध्यक्ष

- प्रा. श्री. प्रकाश उखळकर
- श्री. सौरभ आलासे

समिती सभासद

- श्री. अविनाश भोकरे
- डॉ. श्री. अजय फुलंबरकर
- श्री. सचिन कोगनोळे
- श्री. शरद आलासे
- श्री. विनोद डोरले
- श्री. प्रीतम कासलीवाल

- अनुक्रमणिका -

१. आशीर्वचन / मंगल संदेश

२. संपादकीय मनोगत

३. जैन तत्व परिचय

४. पंचकल्याणाचे महत्त्व

५. पंचकल्याणक - २०२४

६. पंचकल्याणकांची झलक

७. स्वाध्याय

- वर्तमान परिपेक्ष्य में सामाजिक समस्याएं
- महावीर समजून घेताना
- पंचकल्याणक महोत्सवाचा आधुनिक जीवनावर परिणाम

८. आभार

श्री 1008 युगप्रवर्तक
आदिनाथ तीर्थंकर भगवान 11 फिट जिनबिंब

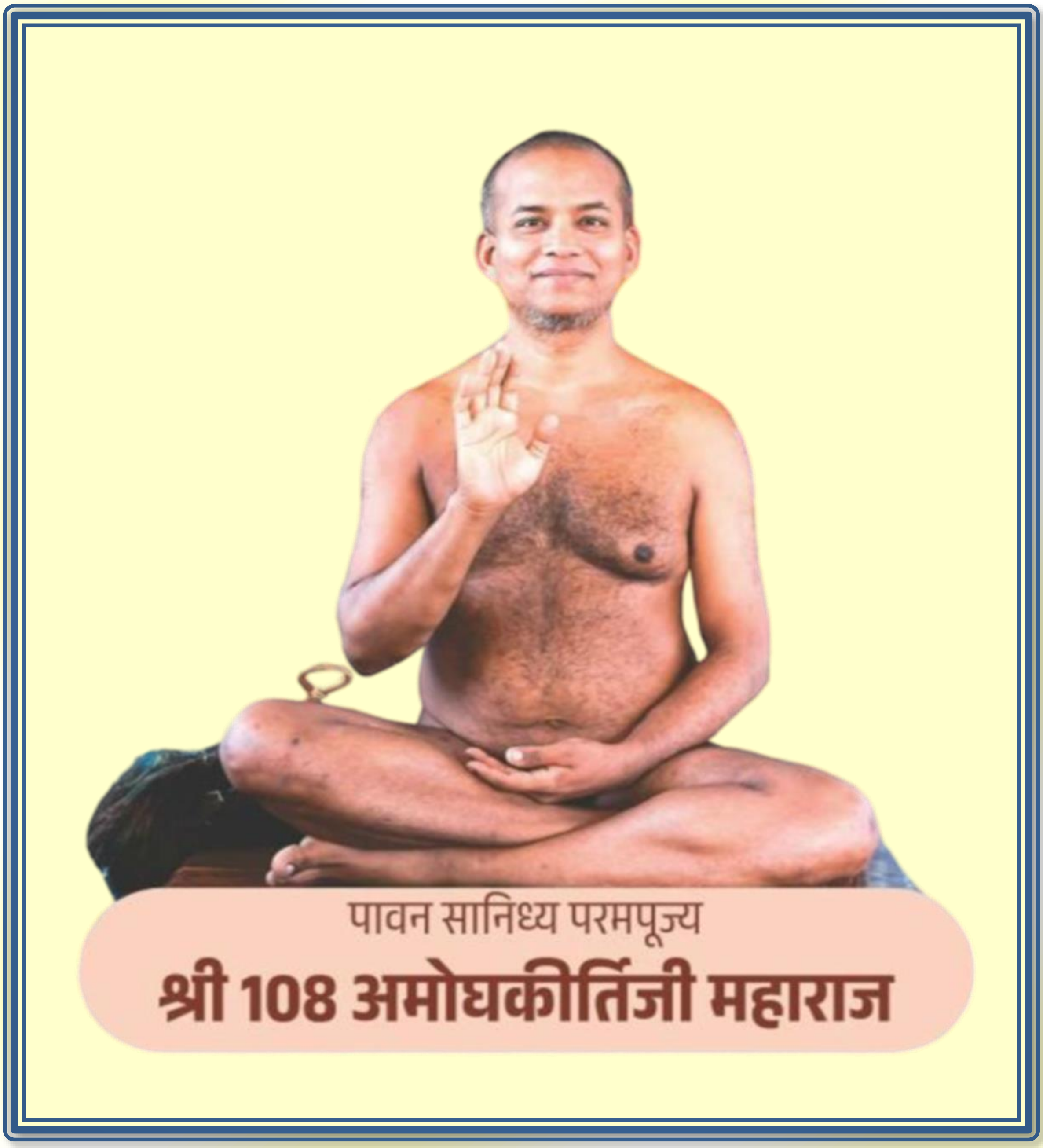

पावन सानिध्य परमपूज्य

श्री 108 अमोघकीर्तिजी महाराज

पंचकल्याणाक महामहोत्सव प्रसंगी आशीर्वचन!

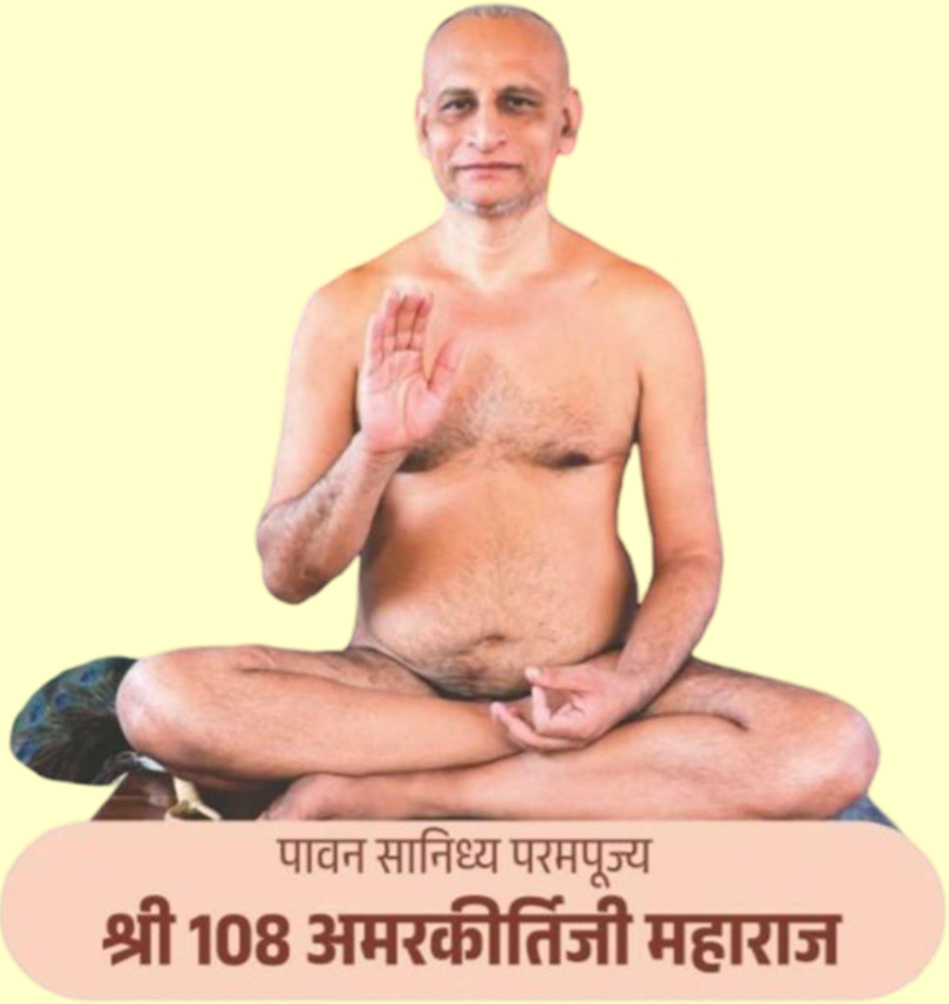
पावन सानिध्य परमपूज्य
श्री 108 अमरकीर्तिजी महाराज

पंचकल्याणाक महामहोत्सव प्रसंगी आशीर्वचन!

१. आशीर्वचन / मंगल संदेश

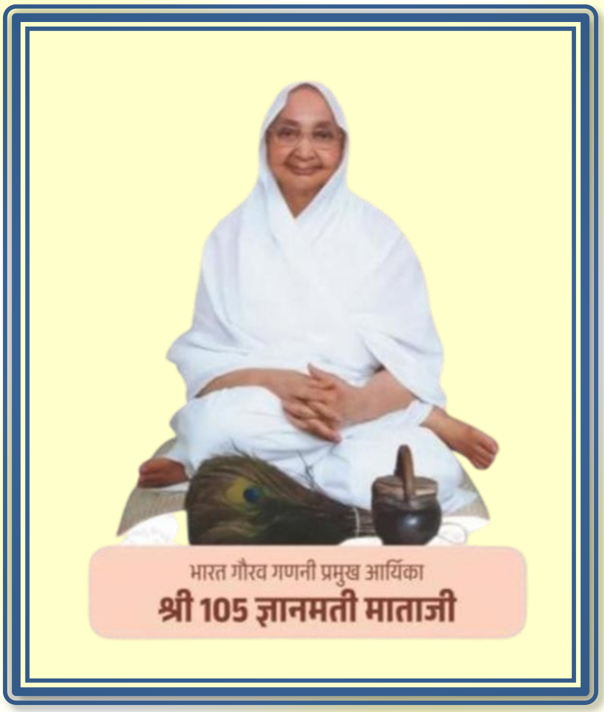

भारत गौरव गणनी प्रमुख आर्यिका
श्री 105 ज्ञानमती माताजी

मुझे यह जानते हुये बेहद खुशी महसूस हो रही है की, निगडी, पुणे (महाराष्ट्र) के श्री १००८ भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदीर में प्रथम तीर्थकर वृषभदेव भगवान की ग्यारह फीट ऊँची मुर्ती (ज्यो की मांगी-तुंगी तीर्थक्षेत्र में स्थापीत १०८ फीट ऊँची मुर्ती की प्रतिकृती है) की पंच-कल्याणक महापुजा अत्यंत हर्षोल्हास पूर्ण वातावरण मे दिनांक ११-१५ डिसेंबर २०२४ तक सानंद मनायी जा रही है।

मुझे ज्ञात है की सन २०२० में यह भगवान वृषभदेव की मुर्ती दिगंबर जैन त्रिलोक शोध संस्थान जम्बुदीप, हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र द्वारा पुना के निगडी जैन मंदौर को उनके अध्यक्ष एवम् ट्रस्टी गण की असीम भक्ति-पूर्वक प्रेरणा के तहत प्रदान की गयी थी। अब उसी मूर्तिके होने जा रहे पंचकल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में सभी श्रावक-श्राविकाओं का अभिनंदन करते हुओ 'मंगल - आशीर्वाद' इस संदेश द्वारा भेज रही हूँ।

पंच-कल्याणक महा-उत्सव मनाते हुए वृषभदेव भगवान की निरंतर पुजा-अर्चा से स्वाध्याय की प्रेरणा प्राप्त करते हुए आप सभी आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रेसर होवें, इसी मंगल-कामना के साथ पुनश्च मंगल-आशीर्वाद।

इस अवसर पर प्रकाशित होने जा रही 'स्मरणिका' के लिए अनेक शुभ-कामनायें।

२. संपादकीय मनोगत

साधर्मी बंधु भगिनींनो,

संपूर्ण भारतात आणी विदेशातही पुणे शहराची तसेच पिंपरी-चिंचवड महानगराची ओळख औद्योगिक, शैक्षणिक क्षेत्रांत अग्रेसर असणारे तसेच सामाजिक व सांस्कृतिक परंपरेची आणी मुल्यांची जपणूक कारे प्रगत विकसनशील शहर अशीच निर्माण झाली आहे

अशा या पिंपरी-चिंचवड महानगरातील प्राधीकरण, निगडी स्थित श्री. १००८ भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदीरात श्री. १००८ युग-प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर भगवान वृषभनाथ देवाच्या भव्य जिनबिंबाचे व शिखरस्थ १००८ भगवान पार्श्वनाथ तीर्थकर जिनबिंबाचे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव दिनांक ११ ते १५ डिसेंबर २०२४ पर्यंत साजरा होतो आहे.

ह्या महामहोत्सवा निमीत्य स्मरणिका डिजीटल माध्यमाहारे प्रकाशीत करतांना विशेष समाधान आणी आनंद होतो आहे. सदर स्मरणिके करिता युगल मुनीराज परमपूज्य श्री. १००८ अमोघकीर्तिजी महाराज व परमपूज्य श्री १०८ अमरकीर्तीजी महाराज यांचे "मंगल आशीर्वाद" मिळाले आहेत. त्यांचे चरणी त्रिवार वंदन !

ज्यांच्या सहर्ष प्रेरणेतून श्री १००८ प्रथम तीर्थकर वृषभदेव भगवंताची ११ फुच उंच आकर्षक मुर्ती आमच्या निगडी जैन मंदीरला मिळाली आणी आता प्राण-प्रतिष्ठीत होत आहे अशा परमपूज्य प्रमुख आर्यिका श्री. १०५ ज्ञानमती माताजींचा आशीर्वाद व मंगल- संदेश" पंचकल्याणक महामहोत्सवाच्या यशस्वी आयोजनाकरीता तसेच त्यानिमीत्ताने प्रकाशित होणाऱ्या स्मरणिकेस लाभला आहे. त्यांचे चरणी आम्ही नतमस्तक होवुन कृतज्ञता व्यक्त करतो. त्यांना शतशः वंदन !!

जवळपास तीन दशकांपूर्वी निगडी जैन मंदीराची पायाभरणी होवुन अगदी थोडक्या बांधकामानीशी निर्माती झाली. त्यावेळी पिंपरी-चिंचवड-निगडी परिसरांत रहाणाऱ्या जैन श्रावक-श्राविकांना पूजा-अर्चा तसेच इतर धार्मीक कार्यक्रमांच्या आयोजना साठी मंदीर रुपाने स्थळ प्राप्त झाले. गत तीन-चार दशकात ह्या शहराचा जसा औद्योगिक आणि शैक्षणिक विकास झपाटयाने होत गेला तसा या भागात जैन समुदाय व्यवसाय, नौकरी तसेच शिक्षणाचे निमित्ताने विकसित होतोय, संख्येनेही वाढतच जातो आहे. मंदीरचे अध्यक्ष व सक्षमपणे कार्यरत ट्रस्टी-गण यांच्या पुढाकाराने तसेच उत्साही समाज बांधवाच्या सहकार्याने व आर्थीक सहयोगाने आमचे निगडी जैन मंदीर बांधकाम, धार्मीक सुविधा, मुनीराज, आर्यिका ह्यांच्या निवासाची, आहाराची सोय, पूजा-अर्चा, स्वाध्याय-पाठशाळा, धार्मीक-सामाजिक उत्सव आयोजन अशा सर्वच बाबतीत प्रगत होनांना दिसते आहे. रम्य धार्मीक परिसर विकसित होतो आहे, स्थिरावतोय, याची पहिली साक्ष म्हणजे सन २०१३ साली मुलनायक अंतिम तीर्थकर श्री १००८ भगवान महावीर स्वामींच्या मनोज्ञ जिनबिंबाचे पंचकल्यानक अतिशय भक्तीने ओतप्रोत

वातावरणांत भव्य प्रमाणात साजरे झाले. तदनंतर मागील ११ वर्षांपासुन मंदीरजी प्रगती, धार्मीक उत्सव, पूजा-अर्चा निरंतर सुरू आहे.

२०१३ च्या भव्य पंचकल्याणक महोत्सवाचे भाव-भक्ति पूर्वक उत्कृष्ठ आयोजन, सांघीक कार्यशैली तसेच कार्यरत अध्यक्ष व ट्रस्टी ह्यांच्या प्रगाढ ईच्छेनुसार व प्रेमपुर्वक विनंती खातर प्रमुख आर्यिका श्री. १०५ ज्ञानमती माताजींनी प्रेरित होवून श्री १००८ प्रथम तीर्थकर भगवान वृषभदेवांची ११ फुट उंच मूर्ती (जी मांगी-तुंगी तीर्थक्षेत्रात स्थापीत १०८ फुट उंच मुर्तीची प्रतिकृती आहे) आमचे मंदीरास सहर्ष भेट म्हणून प्रदान केली. दोन वर्षांपूर्वी म्हणजे २०२२ साली विजया-दशमीच्या पावन् मुहुर्तावर ह्या मुर्तीची स्थापना मंदीर परिसरांत आनंदाने करण्यात आली. दोन वर्षानंतर म्हणजे यावर्षी २०१४ च्या चार्तुमासांत पुण्याच्या माणीक बागेतील जैन मंदीरात युगल मुनीराज परमपुज्य श्री. १०८ अमोधकीर्तीजी महाराज व परमपुज्य श्री १०८ अमरकीर्तिजी महाराजांचे पावन सानिध्य लाभले. त्या निमीत्ताने परमपुज्य युगल मुनीराजांच्या तत्वावधानांत व अधिनेतृत्वात श्री १००८ भगवान वृषभदेवाच्या जिनबिंबाचे पंचकल्याणक सानंद आयोजित करण्यास स्वीकृती लागली. त्यांच्या मंगल आशीर्वादाने, मार्गदर्शनाने आणी प्रत्यक्ष उपस्थिती लाभत असल्यामुळे आम्ही समस्त श्रावक-श्राविका अतिशय उत्साही भावनेनं, भक्तिनं भारावून पंचकव्याणक महोत्सव धार्मीक दृष्या जोश-पूर्ण वातावरणांत साजा करीत आहोत.

पंचकत्यावक महामहोत्सवा निमीत्य डिजीटल स्वरूपात प्रकाशित होणाऱ्या स्मरनिकेत पंचकव्याणक महोत्सवातील गर्भ कल्याणक, जन्म-कल्यानक, दिक्षा- कल्याणक, ज्ञान-कल्याणक आणी निर्वाण कल्याणक साजरा करण्या मागील भूमिका, पूजा विधी व महत्व विषद करणारे तसेच जिन मंदीरांची परंपरा, इतिहास, पंच- महाव्रते, दश-धर्मानुसार यथार्थ प्रधान व आचरण समजावुन सांगणारे लेख समाविष्ठ करतांना समाधान वाटले आहे.

समस्त जीवांचे कल्यान व्हावे, सुख-दुख मय जन्म-मरणाच्या अनादी काळापासून सुरु असलेल्या श्रृखंलेतून मुक्ती मिळविव्या साठी यथार्थ पुरुषार्थ करण्याचा उपदेश सर्व तीर्थकरानी दिला.

वर्तमानकालीन २४ तीर्थकरांपैकी प्रथम तीर्थकर श्री. १००८ भ. वृषभदेवाच्या मुर्तीची प्राण-प्रतिष्ठा सानंद पूर्ण होवून प्रतिष्ठीत जिनबिंबाच्या दर्शनाने, पूजा विधी, स्वाध्याय, मनन चिंतन करीत रत्नत्रयरूपी मोक्ष-मार्गावर यथोचित मार्गक्रमण करण्याची प्रेरणा सर्व जिज्ञासु श्रावक श्राविकांना सतत मिळत राहो, ह्या मंगल भावनेसह.

सस्नेह जय-जिनेंद्र!

प्रा. डॉ अजय फुलंबरकर
व
समस्त स्मरणिका संपादक मंडळ

~~~***~~~
~~~

३. जैन तत्व परिचय

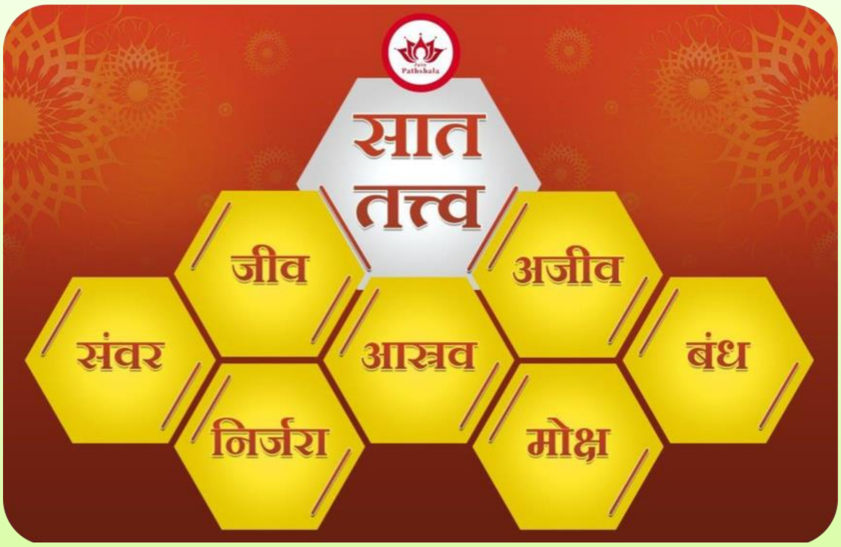

जैन दर्शन में सात तत्व ये हैं: जीव, अजीव, आस्रव, संवर, ननजशरा, बंध, मोक्ष.

जैन दर्शन के मुतानबक, दुननया दो तत्वों से नमलकर बनी है - जीव और अजीव.

जीव चेतन होता है, जबनक अजीव जड़ होता है.

१. जीव: जो तीनों कालों में प्राण के साथ रहता है, चैतन्य अथाशत् ज्ञानदर्शन रखता है अथवा प्राण को धारण करता है, उसे जीव कहते हैं। पांच इंनियां, तीन बल (मनोबल, वचन बल और क्या बल, जीवन और सांस) प्राण के दस पदाथश हैं और जहां ज्ञान के िष्टाओं की क्षमता और कायश भावनात्मक हैं, उन्हें जीव कहा जाता है पशु पक्षी आनद जीव तत्व न्याय स्वरूप आत्मा है।

२. अजीव: जिस व्यक्ति में चेतना नहीं है या जिसके पास कोई वैकक्तिक जीवन नहीं है, उसे अजीव कहा जाता है। लकडी का घर, आदी| अजीव के पाँच प्रकार: पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल.

- ❖ **पुद्गल द्रव्य**: इसमें रस गन्ध और वणश का स्पर्श होता है , जिसे पुद्गल कहा जाता है पुद्गल द्रव्य के अनेक भेद हैं, स्थूल पुद्गल आँखों से दिखाई देता है परन्तु सूक्ष्म पुद्गल दिखाई नहीं देता. इसका सबसे छोटा टुकड़ा पुद्गल जिसका भेद दोबारा नहीं मिलता उसे परमाणु कहते हैं | दो या दो से अधिक वाले पुद्गल परमाणु इसे स्कन्द कहा जाता है| शब्द, आकार, सूयश,

छाया, अंधकार कहलाते हैं। शब्द, आकार, छाया, प्रक्षेपण, चांदनी ये सभी पुद्गल की अवस्थाएं या पर्याय हैं। स्कन्द कहा जाता है|

- **धर्मद्रव्य**: वह पदार्थ जो सभी जीवित प्राणीयो और शरीरो को एक ही समय में चलने में मदद करता है, उसे धर्मद्रव्य कहा जाता है जैसे पानी मछली को चलने में मदद करता है। क्योंकि यह पदार्थ सभी मनुष्ययोको व्याप्त है, परन्तु हमारी आँखों से दिखाई नहीं देता। चलने का बहाना इरादे से समर्थित है। क्योंकि यह अमृत है|
- **अधर्मद्रव्य**: जिसे अधर्मद्रव्य कहा जाता है, जो सभी का कारण है जीवित प्राणी और बुद्धी जिनका उद्देश्य गती में स्तिर रहना है, लेकिन जिनका उद्देश्य उन्हें स्तिर रहने में मदद करना है, अधर्मद्रव्य वह पदार्थ जो सभी प्राणीयो और उद्गलों को स्तिर रहने के लिये प्रेरित करता है, अधर्मद्रव्य कहलाता है। यह अमूर्त है जैसे थके हुए यात्री को पेड़ों की छाया। यह पदार्थ सभी भक्तो के लिये सामान्य है परंतु अमूर्त होने के कारण हमारी आंखों से दिखाई नहीं देता है|
- **आकाश द्रव्य**: जो द्रव्य शरीर में सभी पदार्थों के एक ही समय में विद्यमान रहने का निमित्त मात्र है, वह आकाश द्रव्य है. इसके दो भेद हैं १ लोकाकश २ अलोकाकाश जहां छह पदार्थ रहते हैं उसे लोकाकाश कहते हैं और बाह्य अंतरिक्ष में जो लोग रहते हैं उन्हें लोक कहते हैं लेकिन आकाश एक हि पदार्थ हैं। इस लोकांश में षट द्रव्य रहता है तथा बाह्य आकाश में लोकाकाश को अलोकाकाश कहा जाता है परंतु आकाश द्रव्य केवल एक है|
- **काल द्रव्य**: काल द्रव्य वह पदार्थ जिसका उद्देश्य सभी पदार्थों की स्तिथी को बदलना है, सकल द्रव्य कहलाता है व्यवहार में समय को समय, अवधी, दिन, सप्ताह, पक्ष, माह, वर्ष आदी कहा जाता है यह उस समय की सूक्ष्म, स्थूल, सूक्ष्म अवस्था है, जिससे पदार्थ की स्तिथी ज्ञात होती है।

३. आश्रव द्रव्य: क्रोध, घृणा, प्रेम मात्रा में कर्म के आने को आश्रव कहते हैं,| इसके दो भेद हैं, १. भावश्रव २. तरल पदार्थ | जैसे नाव में छेद हो तो उसमें पानी आने लगता है। इसी प्रकार आत्मा के जीन मापदंडों में कर्म होते हैं उन्हें भावसर्व कहा जाता है और भारी कर्म के परिणाम को द्रव्यसर्व कहा जाता है|

४. बंध द्रव्य: बंध आस्रव के कारण कर्म जीवों का क्षेत्रों में प्रवेश है। बंधन दो प्रकार के होते हैं, भावनात्मक बंधन और भौतिक बंधन।आत्मा का क्रोध और अवज्ञा, जो कर्म बंध का कारण बनता है, उसे भाव बंध कहा जाता है और द्रव बंध के कारण पुद्गल परमाणुओं का कर्म रूप आत्मा प्रदेश में प्रवेश करता है, जैसे दूध और पानी एक साथ मिश्रित होते हैं, द्रव बंध कहलाता है।मन के मिथ्यकरण से उत्पन्न कर्म आत्मा के

मार्ग में विलीन हो जाते हैं, जैसे धूल और चिपचिपाते पदार्थ। च्यूकीं आश्रव से ही बंधन बनता है, इसलिये आश्रव के सभी भेदों को ही सभी बंधनों का कारण मानना चाहिये।

५. संवर: संवर के अनुसार यदी कर्म का फल नहीं मिलेगा तो कर्म आना बंद हो जायेगा इसके भी भाव संवर और द्रव्य संवर नामक दो भेद हैं। जिस प्रभाव से स्राव न हो उसे भाव संवर कहते हैं और जिससे द्रव्य स्राव होता है उसे द्रव्य संवर कहते हैं। तीन गुप्तीया पाँच समितिया दस धर्म बारह २२ पैसा नवचारी उचित संचार था|

६. निर्जरा: निर्जरा आत्मा की शुद्ध आत्मा द्वारा संचित कर्मो का क्रमित रूप से समाप्त हो जाना निर्जरा है, जैसे पानी में घुसे हुए पानी को थोड़ा-थोड़ा करके हटाने से नाम ऊपर उठता है जिस देवदूत के द्वारा कर्म फल देकर नष्ट हो जाता है उसका नाम भाव निर्जरा है और यह कर्म पुद्गल परिणाम परमानु है आत्मा की तरह पृथक्करण भौतिक निर्जरा है आगे मोक्ष पूर्ण शुद्ध विकल्प प्राप्त होता हैं फिर पूर्ण कर्म क्षय हो जाता है फिर व्यक्ति शुद्ध आत्म स्वभाव का व्यक्ति बन जाता है यानी मोक्षय जैसे कि नाव में पानी पूरा नहीं निकाला जाता है क्योकी नाम पूरी तरह से पानी पर आता है तो संवर्ग निर्जना तब बनती है जब समस्त कार्य संपूर्ण व्यवस्था की वीजय होकर आत्मा का शुद्ध व्यक स्वरूप बन जाता है, इसे आत्मा का स्वभाव कहा जाता है।

७. मोक्ष: जब पूर्ण बोध प्राप्त हो जाता है, जब सभी कर्म समाप्त हो जाते हैं, तो स्वयं के शुद्ध रूप को प्राप्त करना ही मोक्ष है। जब नाव में से वह और सारा काम निकाल लिया जाता है तो पानी का नाम पूरी तरह से सामने आ जाता है। इसी प्रकार जब पिछले कर्म नष्ट हो जाते हैं और शुद्ध स्वभाव प्रकट हो जाता है, तो यह आत्मा अपने आरोही स्वभाव के कारण तीनों लोकों से ऊपर उठ जाती है और मोक्ष कहलाती है।

८. पुण्य: वह पुण्य जिसका उदय इच्छित वस्तुओं की प्राप्ती से होता है। वह एक पुण्य कर्म है. मनुष्य को व्यापार में बहुत लाभ होता है, सुन्दर पुत्र भी प्राप्त होता है, पुत्र अच्छी शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदवी प्राप्त करता है, ये सब बातें पुण्य के उदय से ही समझनी चाहिये।

९. पाप: जिस पाप के उत्पन्न होने और किसी वस्तु की प्राप्ती का अवसर हो उसे पाप कर्म कहते हैं, जैसे किसी व्यक्ति का बीमार पड़ना, पुत्र का मर जाना या धन का चोरी हो जाना, ये सभी बातें पाप से उत्पन्न समझनी चाहिये। ज्ञान फैलाना, जाती को ऊपर उठाना. धर्म आदी का आचरण करने से पुण्यबन्ध और जुआ होता है। पाप झूठ बोलना, चोरी करना, दूसरों के बारे में बुरा सोचना |

~~~***~~~
~~~

४. पंचकल्याणाचे महत्त्व

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

हर एक साधक आत्मसाधना कर मोक्ष तो प्राप्त कर सकता है। पर तीर्थकर नहीं बन सकता। इसके लिये अनेक जन्मों की साधना और कुछ विशिष्ट भावनाएं अपेक्षित होती है। विश्वकल्याण की भावना से प्रेरित होकर साधक जब किसी केवलज्ञानी अथवा श्रुतकेवली के चरणो- में बैठकर सोलह कारण भावनाएँ भाता है वही तीर्थंकर प्रकृतिका बंध करता है। जो धर्म परम्परा में आई हुई मलिनता व विकृतिओं को दूरकर धर्म के मूल स्वरूप को पुनःस्थापित करते है ऐसे धर्म तीर्थको चत्वाने वाले अथवा - धर्म-तीर्थ के प्रवर्तक महापुरुष तीर्थकर कहलाते है।

जैन धर्म के अनुसार अवसर्पिणी के चौथे काल (दुषमा-सुषमा काल) और उत्सर्पिणी के तीसरे काल (दुष्शा-सुषमा काल) में प्रत्येक चक्र में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर पैदा होते हैं। यह परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है।

तीर्थंकर महापुरुष के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं निर्वाण के समय इन्द्र, देवगण तथा मनुष्यों के द्वारा जो विशेष उत्सव मनाया जाता है, उसे कल्याणक कहते हैं। कल्याणक पाँच होते है। इसी को पंचकल्याणक कहते है।

1) **गर्भकल्याणक**: सौधर्म इन्द्र अपने अवधिज्ञान से भगवान के गर्भावतरण को निकट जानकर कुबेर को नगरी का निर्माण एवं तीर्थंकर के माता-पिता के घर प्रतिदिन प्रातः, मध्यान्ह, सायंकाल तथा मध्यरात्रि में चार बार - साढे तीन करोड-साढे तीन करोड रत्नवृष्टि करने की आज्ञा देता है। रत्नों की वृष्टि गर्भ में आने के । 6 माह पूर्वसे जन्मपर्यंत होती है। गर्भावतरण के पूर्व रात्रि के अंतिम प्रहर में तीर्थंकर की माँ आल्हादकारी सोलह स्वप्न देखती है। ये स्वप्न तीर्थंकर के गर्भावतरण के सूचक होते है। सौधर्म इन्द्र देवगणों के साथ आकर उत्सव सम्पन्न कर जिनमाता की सेवा के लिए देवकुमारियों को नियुक्त कर देता है। ये देवियाँ माता की सेवा करते हुए माता का मन धर्म चर्चा में लगाए रखती है।

2) **जन्म कल्याणक**: गर्भावस्था पूर्ण होने पर माता तीर्थंकर बालक को जन्म देती है। जन्म होदे ही तीनो लोकों में आनंद पेलजाता है। स्वर्ग में इंद्रियों का आसन कांपता है, घंटा बजता है। इन सभी कारणों से इंद्र और देवताओं ने तीर्थंकर को जन्म देने का निर्णय लिया - यह एक अच्छी प्रथा है। उसके बाद सौधर्म इन्द्र सात प्रकार की सेना के साथ ऐरावत हाथी पर सवार होकर जन्मनगरी की ओर प्रस्थान करते हैं। शची (इंद्राणी) प्रसूति ग्रह में प्रवेश करती है और माँ को स्वप्न की नींद से जगाती है और बच्चे को ले आती है। और सौधर्म इन्द्र को सौंप देता है। सौधर्म इंद्र बच्चे को देखते हैं - बहुत उत्साहित हो जाते हैं, और ऐरावत हाथी पर चढ़ जाते हैं। बालक को सुमेरु पर्वत पर ले

जाकर 1008 कलशों से बालक तीर्थकर का अभिषेक करता है। इन्द्र बालक के दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिन्ह देखता है वही चिन्ह घोषित कर उनका नामकरण करता है।

3) **तप (दीक्षा) कल्याणकः** जन्मकल्याणक के बाद तीर्थंकरों का बाल्यकाळ व्यतीत होता है। एवं युवा होने पर राज्यपद को स्वीकार करते है। किसी निमित्त को पाकर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। उसी समय ब्रम्हस्वर्ग से लौकान्तिक देव आकर तीर्थंकरों के वैराग्य की प्रशंसा करते हुए स्तुति करते है। तत्पश्चात् कुबेर द्वारा लायी गई पालकी में तीर्थंकर स्वयं बैठते है, उस पालकी को मनुष्य एवं विद्याधर 7-7 कदम तक ले जाते है, इसके बाद देवगण उस पावकी को आकाश मार्ग से दीक्षावन तक ले जाते है। वहाँषर देवों द्वारा रखी हुई चन्द्रकांत मणी की शिलापर पद्मासन मुद्रा में पूर्वाभिमुख होकर सिद्ध परमेष्ठी को नमस्कार कर पञ्चमुष्ठी केशलोंच कर जिनमुद्रा को अंगीकार कर लेते है। देवगण तीर्थकर पुरुष की विशेष पूजा-भक्ति कर अपने-अपने स्थान चले जाते है।

4) **ज्ञान कल्याणक**: तीर्थकर दीक्षोपरांत मौन धारण कर कठोर तपस्या करते हुए धर्मध्यान को बढाते हुए क्षपक श्रेणी पर आरुढ होकर 12 वे गुणसान के अंत में मोहनीय, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, और अंतराय कर्म का क्षय करते- हुए केवलज्ञान प्राप्त करते है। केवळ ज्ञान उत्पन्न होते ही सौधर्म इन्द्र अपने 'अवधिज्ञान से जानकर सभी देवों के साथ आकर दर्शन पूजन करते है। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवशरण की रचना करता है। समवशरण में तीर्थकर प्रभु गंधकुटीपर अधर विराजमान होते है। देव, मनुष्य, विद्याधर, तिर्यञ्च सभी जीवगण अपने-अपने का वैरभाव छोडकर जिनेंद्र भगवानका उपदेश सुनते हैं।

5) **निर्वाण (मोक्ष) कल्याणक**: तीर्थकरों का जब मोक्ष जाने का समय- निकट आ जाता है, तब वे समवशरण को छोडकर योग निरोध कर 14 वें गुणस्थान में आते ही पाँच हस्व स्वरों के (अ,इ,उ, ५, (ऌ) उच्चारण मात्र काळ में चार अधातिया कर्मों का क्षय करके निर्वाण को प्राप्त हो जाते है। उसी समय इन्द्र देवगण निर्वाण भूमि में आते है, और- तीर्थकर के शरीर को पालकी में विराजमान करते है। अग्निकुमारदेन अपने मुकुट से उत्पन्न अग्नि के द्वारा तीर्थकर के शरीर का अंतीम संस्कार करते है। पश्चात् उस भस्म को अपने मस्तक पर लगाकर उन जैसा बनने की भावना करते है। विधिपूर्वक पूजन करके इन्द्रगण वापस चळे जाते है।

प्रतिष्ठाचार्य
पं. अजित नवहीराम उपाध्याय
कोथी (कोल्हापूर)

~~~***~~~
~~~

५. पंचकल्याणाक - २०२४

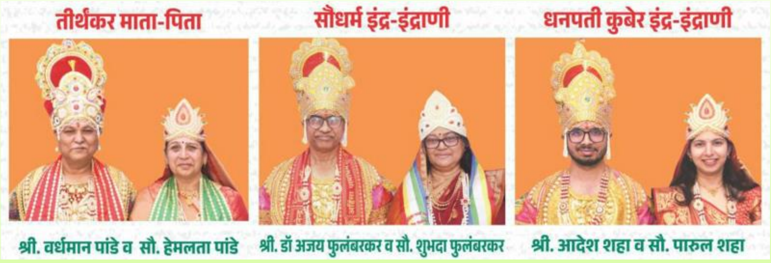
तीर्थकर माता-पिता
सौधर्म इंद्र-इंद्राणी
धनपती कुबेर इंद्र-इंद्राणी
श्री. वर्धमान पांडे व सौ. हेमलता पांडे
श्री. डॉ अजय फुलंबरकर व सौ. शुभदा फुलंबरकर
श्री. आदेश शहा व सौ. पारुल शहा

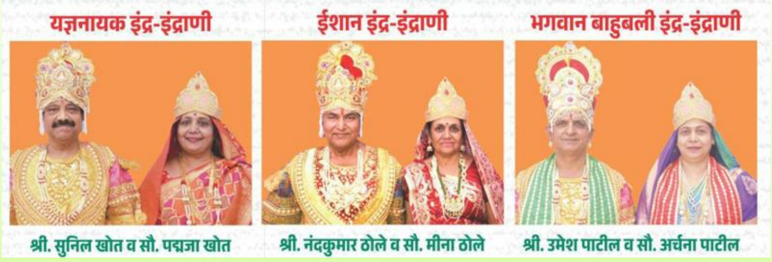
यज्ञनायक इंद्र-इंद्राणी
ईशान इंद्र-इंद्राणी
भगवान बाहुबली इंद्र-इंद्राणी
श्री. सुनिल खोत व सौ. पद्मजा खोत
श्री. नंदकुमार ठोले व सौ. मीना ठोले
श्री. उमेश पाटील व सौ. अर्चना पाटील

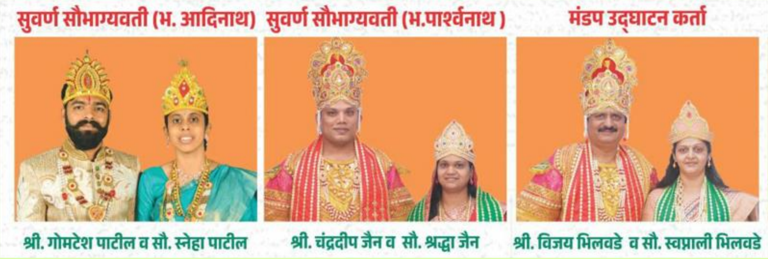
सुवर्ण सौभाग्यवती (भ. आदिनाथ)
सुवर्ण सौभाग्यवती (भ.पार्श्वनाथ)
मंडप उद्घाटन कर्ता
श्री. गोमटेश पाटील व सौ. स्नेहा पाटील
श्री. चंद्रदीप जैन व सौ. श्रद्धा जैन
श्री. विजय भिलवडे व सौ. स्वप्नाली भिलवडे

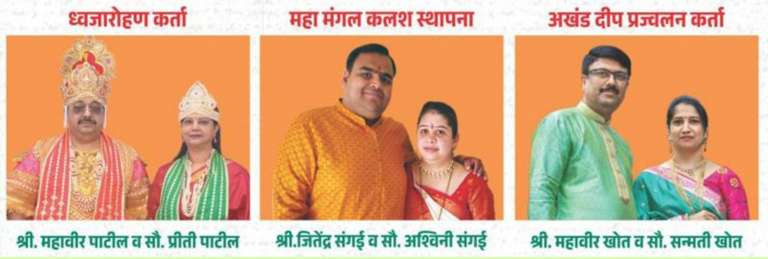
ध्वजारोहण कर्ता
महा मंगल कलश स्थापना
अखंड दीप प्रज्वलन कर्ता
श्री. महावीर पाटील व सौ. प्रीती पाटील
श्री.जितेंद्र संगई व सौ. अश्विनी संगई
श्री. महावीर खोत व सौ. सन्मती खोत

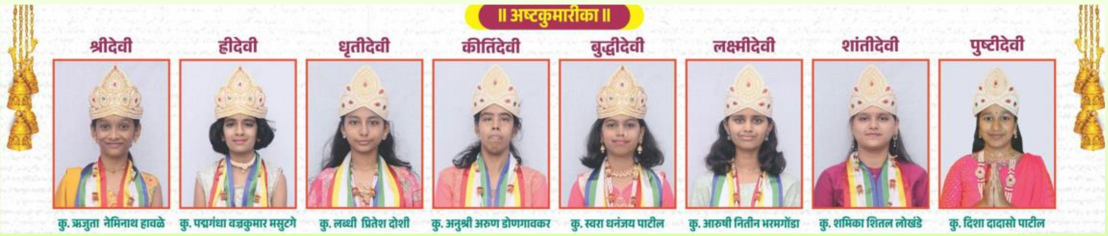
॥ अष्टकुमारीका ॥
श्रीदेवी
हीदेवी
धृतीदेवी
कीर्तिदेवी
बुद्धीदेवी
लक्ष्मीदेवी
शांतीदेवी
पुष्टीदेवी
कु. ऋजुता नेमिनाथ हावळे
कु. पद्मगंधा वज्रकुमार मसुटगे
कु. लब्धी प्रितेश दोशी
कु. अनुश्री अरुण डोणगावकर
कु. स्वरा धनंजय पाटील
कु. आरुषी नितीन भरमगोंडा
कु. शमिका शितल लोखंडे
कु. दिशा दादासो पाटील

६. पंचकल्याणकांची झलक

वर्ष २०२४ पंचकल्यानकचे ठळक मुद्दे

वर्ष २०१२ मध्ये निगडी जैन मंदिरातील पंचकल्यानाक या ऐतिहासिक घटनेच्या पार्श्वभूमीवर, वर्ष २०२४ पंचाकल्यानाकची सुरुवात प्रत्येकाकडून खूप जास्त अपेक्षेने झाली. भव्य कार्यक्रम नियोजनात आणि आता अंमलबजावणीत आहे. आम्हाला काही ठळक वैशिष्ट्ये सामायिक केल्याचा आनंद आणि अभिमान आहे.

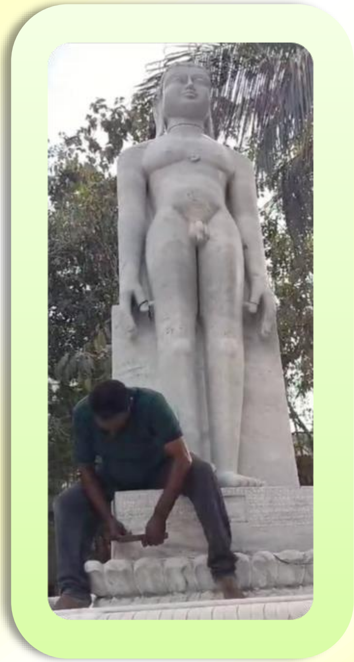

पंचकल्यानकाची तयारी: पहिले पाऊल म्हणून समितीने विविध उप समित्यांची गरज पूर्ण केली आणि त्यांची ओळख पटविली. यामध्ये पुजा समिती, अन्न समिती, सांस्कृतिक, मंडप आणि इतर बऱ्याच केंद्रित क्रियाकलापांचा समावेश होता. समांतर पुतळा आणि त्याच्या सभोवतालची तयारी झाली.

इंद्र, अष्टकुमारिका इत्यादींसह विविध भूमिका भक्तांनी स्वीकारल्यात. तयारीची स्थिती जाणून घेण्यासाठी बैठकींची संख्या आखण्यात आली. प्रत्येक उपसमितीने वेळेवर तयारीची स्थिती प्रदान केली.

श्री. अरविंद जैन यांच्या सन्माननीय उपस्थितीत खास रेकॉर्ड केलेले गाणे प्रसिद्ध झाले. त्याच दिवशी वितरणासाठी आमंत्रण पत्र देखील उघडले गेले. श्री. फाडे, त्यांच्या नेहमीच्या आणि सहाय्यक भूमिकेत एक महत्वाचा घटक होता.

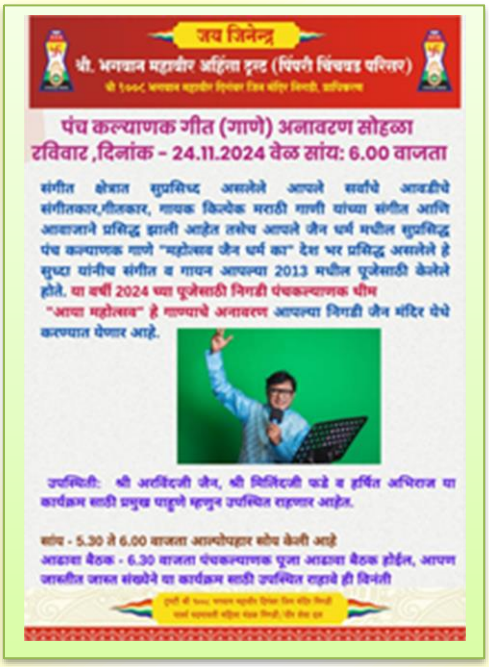

जय जिनेन्द्र

श्री. भगवान महावीर अहिंसा ट्रस्ट (पिंपरी चिंचवड परिवार)

पंच कल्याणक गीत (गाणे) अनावरण सोहळा
रविवार ,दिनांक - 24.11.2024 वेळ सांय: 6.00 वाजता

संगीत क्षेत्रात सुप्रसिध्द असलेले आपले सर्वांचे आवडीचे संगीतकार,गीतकार, गायक कित्येक मराठी गाणी यांच्या संगीत आणि आवाजाने प्रसिद्ध झाली आहेत तसेच आपले जैन धर्म मधील सुप्रसिद्ध पंच कल्याणक गाणे "महोत्सव जैन धर्म का" देश भर प्रसिद्ध असलेले हे सुध्दा यांनीच संगीत व गायन आपल्या 2013 मधील पूजेसाठी केलेले होते. या वर्षी 2024 च्या पूजेसाठी निगडी पंचकल्याणक थीम "आया महोत्सव" हे गाण्याचे अनावरण आपल्या निगडी जैन मंदिर येथे करण्यात येणार आहे.

उपस्थिती: श्री अरविंदजी जैन, श्री मिलिंदजी फडे व हर्षित अभिराज या कार्यक्रम साठी प्रमुख पाहुणे म्हणुन उपस्थित राहणार आहेत.

सांय - 5.30 ते 6.00 वाजता अल्पोपहार सोय केली आहे
आढावा बैठक - 6.30 वाजता पंचकल्याणक पूजा आढावा बैठक होईल, आपण जास्तीत जास्त संख्येने या कार्यक्रम साठी उपस्थित राहावे ही विनंती

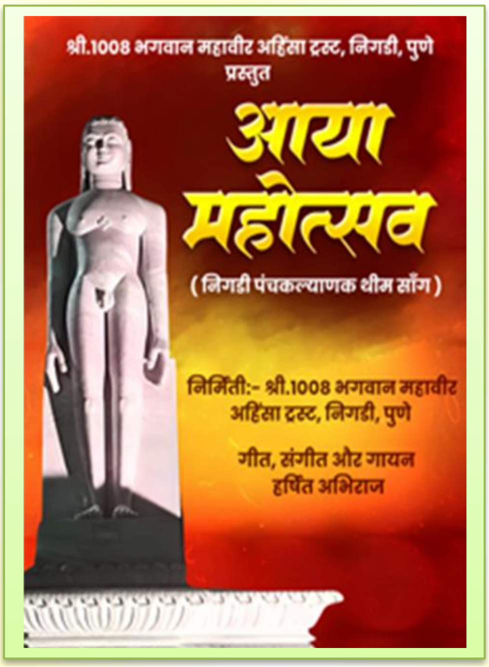
श्री.1008 भगवान महावीर अहिंसा ट्रस्ट, निगडी, पुणे
प्रस्तुत
आया
महोत्सव
(निगडी पंचकल्याणक थीम सॉंग)
निर्मिती:- श्री.1008 भगवान महावीर अहिंसा ट्रस्ट, निगडी, पुणे
गीत, संगीत और गायन
हर्षित अभिराज

मुख्य कार्यक्रमाच्या तयारीसाठी, दोन दिवस आधी आलेल्या सर्व प्रमुख सहभागींनी साठी हळदी सोहळा साजरा करण्यात आला.

गर्भकल्याणाक (दि. ११ डिसेंबर २०२४):

भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर व श्री भगवान महावीर अहिंसा ट्रस्ट यांच्या वतीने ११ डिसेंबर रोजी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवाला प्रारंभ झाला. हा महोत्सव १५ तारखेपर्यंत चालणार आहे. श्री १०८ अमोघकीर्तिजी महाराज यांनी गर्भसंस्काराचे महत्त्व सांगितले, ज्यामुळे

समाजासाठी कार्य करणारे पुण्यवान जीव जन्माला येतात. गर्भसंस्कार न केलेल्यांमुळे समाजात तेढ आणि भ्रष्टाचार निर्माण होतो, असे त्यांनी स्पष्ट केले.

श्री. १०८ अमरकीर्तिजी महाराज यांनी गर्भसंस्कार झालेले बालक माता-पित्यांसाठी गर्वाचे कारण ठरतात, असे सांगितले. जैन समाजाचे महामंत्री महावीर ठोले यांनी समाजाची एकता आणि भविष्यकाळात एकसंधतेच्या महत्त्वावर भाष्य केले.

काँग्रेसचे पुणे शहर सरचिटणीस श्री. अभय छाजेड यांनी समाजाच्या एकतेची आवश्यकता व्यक्त केली. माजी खासदार श्री. राजू शेट्टी यांनी 'जगा आणि दुसऱ्यांना जगू द्या' हा संदेश दिला.

महोत्सवाच्या पहिल्या दिवशी मंगल कलश, कंकण बंधन, महायाग आणि विविध धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करण्यात आले. यामध्ये मोठ्या संख्येने श्रावक श्राविकांनी सहभाग घेतला.

प्रथम मुख्य मंदिरापासून पूजा स्थळी मिरवणूक काढली गेली.

~~~***~~~
~~~

॥ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव ॥
दिवाण बहादूर अण्णासाहेब लठ्ठे व्यासपीठ

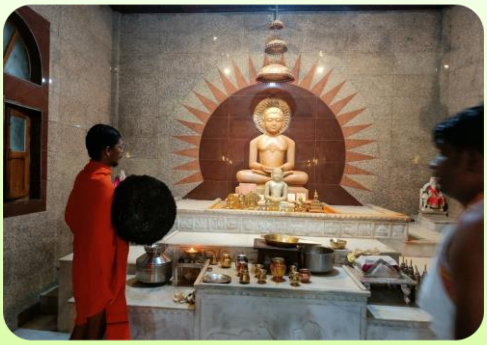

दिवाण बहादूर अण्णासाहेब लठ्ठे व्यासपीठ

DPU

७. स्वाध्याय

वर्तमान परिपेक्ष्य में सामाजिक समस्याएं...

जैध धर्म मुल प्रकृति जनधर्म है, वह किसी जाति वर्ग या समाज से नही बंधा रहा। वह तो सार्वभौमिक था और आज भी सार्वभौमिक है। जनधर्म से तात्पर्य है, सामुदायिक चेतना को प्रतिष्टित करना । जिसके कारण जैनधर्म प्रभावक स्थिती में था। उसका अपना गौरवशाली इतिहास था। प्रथम शताब्दी में उसमें कोई विघटन नही था। धिरे धिरे उसमें श्वेतांबर परम्परा का बीजारोपण होना शुरू हुआ और पंचमशताब्दी तक श्वेतांबर परम्परा स्पष्ट रूप से स्थापित हो चुकी। लगभग दसवी शताब्दी में जैनधर्म पर भीषण आघात आया । जनधर्म के आकर्षक रूप को देखकर भयंकर ईर्ष्या का जन्म हुआ और वैदिक धर्मानुयायियों ने जैन धर्मावलम्बीयोपर आक्रमण किये। उनकी कलाकृतियों का विनाश किया। जैनोपर नरसंहार हुआ और उन्हे अल्पसंख्याक बना दिया गया। इसी दौरान जैनों का धर्मान्तर हुआ। देश देशोन्तरों में पलायन हुआ । जैन ब्राहमण, जैन क्षत्रिय, जैन वैश्य, जैन शुद्र जैसी जातियों की उत्पती इसी की फलश्रुती है। कुछ लोगों ने राजाश्रय न मिलने के कारण, कठिण धर्म तत्वो के कारण धर्म परिवर्तन किया। भगवान महावीर के जाने के बाद भारत और भारत के बाहर जैन धर्म इतना फैला हुआ था कि तब उनकी संख्या पुरे विश्व में चालीस करोड थी जो अब सिमटते जा रही है, और सरकारी आकडों के अनुसार वह अब मात्र ४३ लाखही बचे है। जो हमारे लिए एक बहुत बडी समस्या है, और ऐसे स्थिती में हम श्वेतांबरी, दिगम्बरी, तेरह पंथी, बीस पंथी आदी पंथो में बटते जा रहे है। जिसके कारण जैन समाज बहुत बडे संक्रमण काल से गुजर रहा है। जहाँ दुसरे धर्मावलम्बी आपस में संघटित हो रहे हैं, तब हम भगवान महावीर की परम्परा माननवाले जैन विघटीत हो रहे है। उनके सामने कई सारी चुनौतियाँ है। जिसके लिए हम सबको पंथवाद की दिवारों को तोडकर कदम से कदम मिलाकर एक साथ चलना होगा। जो हमारे लिए उचित है, औचित्य पुर्ण है। जिसके लिए हम सबको मिल जुलकर चिन्तन कर आगे बढने की आवश्यकता है।

आज हमारा युवा वर्ग धर्ममार्ग से दुर हो रहा है। हम हमारे आचार विचार से पतित हो रहे है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण हमारी आनेवाली पीढी जैन कहलाने लायक नही रहें। वे मॉडर्न जैन बनना चाहते, कैसे भी जीना चाहती है, कही भी, कैसी भी घुमना चाहती है, कैसी भी पहनावा पहनती है, उन्हे क्रिसमस डे, फ्रेन्डशीप डे, व्हॅलेटाईन डे आदी अच्छे लगते है। उन्हे हमारे त्योहार पर्व मनाने अच्छे नही लगते । उन्हे अपने जैन धर्म के प्रति, संस्कृतिके प्रति आत्म गौरव नही है। और जिन्हे धर्म गौरव, आत्मगौरव नही होता उनके जीने का कोई अंदाज नही होता। उन्हे धर्म से जुडाने के लिए हमको चिन्तन करना होगा।

अत्यंत चिंता की समस्या है कि, आखिर हमारे समाज में इनती धनसम्पति होते हुए वो ऐसे कार्यों में क्यो नहीं लग रही जिससे भावी पिढी संस्कारवान बने तथा जैन धर्म के मुल सिध्दान्तो की रक्षा हो सके।

आजकी शिक्षा प्रणाली कान्हवेन्ट स्कुल की हो गयी है। उसपर पाश्चात्य सांस्कृतिका प्रभाव है। उच्च शिक्षा के कारण नैतिकता का पतन हो रहा है। इसलिए हमें अपने बच्चो को संस्कारित बनाने के लिए हमारी अपनी शिक्षा संस्थानो के माध्यम से उन्हे अच्छी शिक्षा देनी होगी। जैसे की तीर्थंकर महावीर युनिव्हरसिटी मुरादाबाद में है, औरंगाबाद महाराष्ट्र के एलोरा में जैन गुरूकुल है। जिससे आनेवाली पिढी को संस्कारवान तथा जैनधर्म के अनुकुल बनाने के लिऐ ऐसे संस्थानो की देश में महती आवश्यकता है। हमारे में लक्ष्मी पुत्रों की कमी नही है। कमी तो सिर्फ इच्छा शक्ती की है। हमारे साधु संतो को भी भावी पिढी को गलत खान पान एवं गलत संगति से बचाने के लिए ऐसे बडे बडे शिक्षा संस्थान खुलवाने का प्रयास अपने प्रवचनो के माध्यम से करना चाहिए। सम्पत्ति के अर्जन और विसर्जन में जैन समाज किसी भी समाज से पीछे नही है, बल्की अग्रणी है । शिक्षाव्रतो की अवधारणा की प्रष्ठभुमी में परकल्याण करने की भावना निहित है। हमारा साधु संप्रदाय यदि इस ओर कटिबध हो जाए तो शैक्षणिक संस्थाओ और चिकित्सालयों जैसे साधनों के माध्यम से जैनधर्म को बचाया जा सकता है।

आज हमारे संस्कार पतित होते जा रहे है। आचार विचारों में पतन हो रहा है। वेशभुषा में पतन हो रहा है। हमारी कन्याओं के, महिलाओं के कपडे कम होते जा रहे है। शादी विवाह में कई परिवर्तन आ रहे है। हमारी सारी मर्यादायें टुट रही है। हम खंडीत हो रहे है। हमारी कन्याये इधर उधर भागकर विवाह कर रही है। यह हमारे लिए, धर्म के लिए सौभाग्यशाली नही है। इसलिए अभी पानी हमारे पैरों के नीचे आऐ उसके पहले पाल बांधना जरूरी है। हम सभी को एक होकर आगे आना जरूरी है।

आधुनिक जीवनशैली में आधुनिक संसाधनों के कारण आज की पिढी अनेक विकृतियों की गिरफ्त में है। विज्ञान ने मानव को विकास दिया है, परंतु विनाश के किनारे पर रख दिया है। हम जानते है कि हररोज के काम आज आधुनिक संसाधनों के बिना नही हो सकते। स्मार्ट फोन, इंटरनेट, युट्युब, ट्विटर, चॅटींग, व्हिडीयो गेम्स, पोरोनो ग्राफी आदी के माध्यम से जो भी परोसा जा रहा है, उससे अनेक विकृतियाँ युवांवों पर हावी हो रही है। मात्र छोटे बच्चे ही नही अपितु बुजुर्गोतक सभी मोबाईल की बुरी आदत से लम्बे समयतक उससे चिपके रहते है। जिसके कारण जीवनशैली में आपसी दुरी बढती जा रही है। हमें पता है कि धोका हमेश अच्छी भेष में ही हुआ है। जैसे रावण ने साधुका भेष धारणकर सीताहरण किया था। वैसा ही अब मोबाईल रावण के रूप में स्मार्ट बनकर हमारा हरण कर रह है।

इसलिए मोबाईल हमारे पास आने के लिए स्वयं को ही एक लक्ष्मण रेषा बनाना आवश्यक हो गया है। छोटे बच्चो को स्मार्ट फोने से दुरी बनाए रखना आवश्यक है। यह एक कटु यथार्थ है कि आज के इस विज्ञान और आयटी के युग में हम मोबाईल से दुरी नही रखता

सकते। इसलिए हमारे मोबाईल में बच्चों को संस्कारित करने जैसे ॲप डाऊनलोड हो जिससे वे धर्म से जुड सके और यह काम प्रत्येक ने अपने घरसे ही शूरू किया और अपने साथ दस परिवार को संस्कारित किया तो एक अच्छा भविष्य हमारा बन सकता है। इस कार्य के लिए हमारी महिलाओने सक्रियता से आगे आना चहिए, जिससे इसका प्रचार प्रसार को गतिमिल सकेगी । राष्ट्रीय संस्थाए दिशाहिन है, विद्वत वर्ग दिगभ्रमित है। सम्प्रदायिकता ने धार्मिकता का चोला पहन रखा है। आध्यात्मिकता जीवन से दुर हाती जा रही है। यह समाज के लिए और भी अधिक चिंतनीय और दयनीय है।

समाज सम्प्रदाय और पंथवाद में तो बटा हुआ है, परंतु अब संतवाद की लहर में समाज संतों में बटा नजर आ रहा है। यदि हम सारे ही महावीर के अनुयायी है, सारे ही णमोकार के उपासक है और जिनागम् के प्रचारक है, जब सिध्दान्तों में और उपदेशो में कोई अन्तर नही है तो संत संत के नामपर समाज में अलगांव क्यो है? हमको चाहिए कि पंथवाद मे न उलझते हुए पथपर चलने का संकल्प हम करें। तब कही जाकर हमारा जैन समाज संघटित रूप में उभरकर आएगा।

नवनिर्माण, नये नये तीर्थ, नये नये मंदिर बनते रहेंगे, लेकिन उसके साथ हमें उन्हे पूजने के लिए जीवन्त मुर्तीयों का भी निर्माण करना होगा। तब कही जाकर इन तीर्थों का भी हम संरक्षण और उध्दार कर सकेंगे।

मै इस आलेख के माध्यम से हमारे श्रेष्टी जनो को निवेदन करना चाहूँगा कि आनेवाली पीढी को कैसे हम धर्म मार्गपर ला सके, कैसे उन्हे संस्कारित कर सके, इस का चिन्तन होना चाहिए । इसके लिए हमें युवा वर्ग को अधिकाधिक प्रेरित करना चाहिए। उनका जोश और हमारा होश एक साथ आजाऐं तो समाज का नवनिर्माण होने में देर नही लगेंगी।

हो गई पीर पर्वत से निकलती चाहिए। एक और गंगा यहाँ से बहनी चाहिए। कौन कहता है कि आकाश को सुराग नही होता। एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों एक साहस तो जुटाओ और जैन होने का परिचय दो ।

मैं आप सबसे आशान्वीत हूँ, हमारा जैनधर्म सुरक्षित रहे। उसे कोई आच न आने पाए, इसे कोई बदल न सके। आप स्वस्थ रहे, सच्चे रहे, अच्छे है रहे।

सबको को सन्मति मिले इसी शुभभावों के साथ....

धन्यवाद !

महावीर दीपचंदजी ठोले
महामंत्री, श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थसंरक्षिणी,
महासभा महाराष्ट्र प्रांत
२९, महायोग, मोहनलाल नगर,
कलेक्टर ऑफीस के सामने, औरंगाबाद (महा.)
मो. ७५८८०४४४९५

~~~***~~~
~~~

महावीर समजून घेताना

जगातील मानवतेच्या विकासात ज्या महापुरुषांची नावे अग्रक्रमावर येतात त्यातील अत्यंत ठळक नाव म्हणजे भ. वर्धमान महावीर. अन्य प्राचीन दर्शनशास्त्रात त्यांचे नाव निग्गंठ नाथपुत्त असे येते. सुमारे अडीच हजार वर्षांपूर्वीचा भारत हा अनेक स्थित्यंतरातून ढवळून निघाला होता.वेदोक्त यज्ञयाग आपल्या चरम अवस्थेत होता. यज्ञात पशुबळी दिली जायची. बहुजन वर्ग आणि स्त्रिया यांना पशुहून हीन वागणूक मिळण्याचा तो काळ होता. शोषण होत होते. प्राचीन काळात ईश्वराचे अस्तित्व आहे किंवा नाही हा वाद शेकडो वर्षांपासून घातला जात असताना महावीरानी याला एक नवा विचार दिला. अनेक दुरितानि भरलेल्या क्षणोक्षणी अपयशाचे फटके बसत असताना, निराशाच्या अंधाराने हृदय व्यापलेले असताना,वैफल्याचे चटके बसत असताना, सद्गुणांचा पदोपदी अपमान व पराभव होत असतो हे दिसत असताना माणसाला सन्मार्गावर चालण्यासाठी उत्साह व बळ मिळणार तरी कोठून? अशा अनिश्चिततेच्या आणि संभ्रमाच्या काळात महावीरांचा उदय झाला.

प्राचीन ग्रीकमध्ये जसे प्लेटो आणि अरीस्टोटल यांच्या व्यापक आणि भव्य तात्विक प्रणालीनंतर स्टोईक आणि एपिक्युरियन्स यांनी नीती संबंधी मुक्त चिंतन केले तसेच भारतात भ.आदिनाथांपासून चालत आलेल्या निकोप व शुद्ध श्रमण धर्म आणि सिद्धांतांची महावीरांनी पुनर्मांडणी केली. कर्मकांडाचा अतिरेक झाल्यामुळे समाजात अनेक अंधश्रद्धा, दुष्ट चालीरीती, अनिष्ट प्रवृत्ती बोकाळल्या होत्या व समाज अधोगतीची वाटचाल करीत होता, अनीतीचे प्राबल्य वाढत होते.

महावीरांच्या समकालीन असलेल्या काही दर्शनशास्त्री आपल्या धारदार बुद्धिचातुर्याने आपल्या अनितीचेही सुंदर व जोरदार समर्थन करत होते. विचारांची बेबंदशाही व अराजकता निती आणि सिद्धांतातही गोंधळ घालीत होती, तेंव्हा महावीरांनी शुद्ध ज्ञानावर आधारलेल्या धर्माची व त्याचा आधार असलेल्या सद्वस्तुशास्त्रीय सिद्धांताची मांडणी करून भांबावलेल्या जनतेला चिरंतन दिलासा दिला. महावीरांनी मानवाच्या दृष्टीला ईश्वराकडून स्वताकडे वळविले. धर्म ईश्वरकेन्द्री राहू न देता मानवकेन्द्री बनविला आणि मानवाचे पारतंत्र्य नष्ट करून त्याची अंतर्हित शक्ती व्यक्त करायला प्रवृत्त व समर्थ केले. मानवाची प्रतिष्ठा व सामर्थ्य वाढविण्याच्या दृष्टीने हे कार्य व दृष्टीकोन निश्चितच महत्वाचा आहे.

मानव दैवी शक्तीवर अवलंबून राहिला तर त्याचे परावलंबन वाढते आणि त्याच्या ठिकाणी दुर्बलता ,कर्तृत्वाचा अभाव, आत्मविश्वासाची उणीव व प्रयत्नशीलता कमी होते. या सगळ्या पार्श्वभूमीवर महावीरांनी बहुजन समाजाला आश्वस्त केले. केवळ मानवच नव्हे तर सृष्टीतील सगळ्या जीवांच्या कल्याणाचा मार्ग प्रशस्त केला. गृहस्थ आणि संन्याशी यांना अनुक्रमे व्यवहार व निश्चयधर्म सांगितला. मानवाचे प्रत्यक्ष दैनंदिन जीवन व व्यवहार शुद्ध, प्रामाणिक, प्रांजळ व निर्मळ कसे होईल यासाठी त्यांनी गृहस्थाना श्रावकाचार सांगितला. श्रावक म्हणजे ज्यांना या जगाचे, संसारिक जीवनाचे, देहाचे व इंद्रीयसुखाचे आकर्षण वाटते पण तरीही आपापल्या परीने, शक्तीने जे अंशमात्र का असेना पण धर्माची साधना करू इच्छितात असे गृहस्थ. घरात, संसारात, समाजात, बायकोमुलांच्या, मातापित्यांच्या, मित्रांच्या व अनेक प्रलोभनांच्या परिसरात राहून मनाला त्यांच्यापासून अलिप्त होता येत नाही हे धर्मप्रवर्तकांना नक्की माहित असते.

वैराग्य हे लादता येत नाही किंवा इतरांनी घेतले म्हणून केवळ देखादेखी करून अज्ञानाने दीक्षा घेतली तर त्यामुळे होणारा साधू हा ढोंगी, भोंदू, अप्रामाणिक व दिखाऊ बनतो. त्यामुळे समाजात दंभ, अनाचार बोकाळतो. त्यामुळे जैनांनी सर्वांसाठी एकच एक किंवा सरसकट नैतिक संहिता सांगितली नाही. आपापल्या कुवतीप्रमाणे व पात्रतेप्रमाणे नीतीची विविध बंधने लोकांना सांगितली. “श्रमण” व “श्रावक” यांच्यासाठी कमीअधिक उग्र व्रतांच्या संहिता सांगितल्या आहेत. लोकांच्या मानसिक पातळीना

अनुसरून महावीरांनी आचारशास्त्र सांगितला. सर्वसंगपरित्याग केल्याशिवाय आत्म्याबरोबर चिरंतन वास करीत असलेल्या विकारांना जिंकणे कठीण आहे असे संसारापासून विरक्त झालेल्या, अनासक्त, व आत्मचिंतनात रमलेल्या सन्याशाना यत्याचाराची शिकवण दिली. संन्याशांच्या शिथीलाचारावर ते असे म्हणाले होते की केवळ डोक्याचे मुंडण केल्याने कुणी श्रमण होत नाही, ओंकाराचे जाप्य केल्याने कुणी ब्राम्हण होत नाही, निर्जन वनात राहिल्याने कुणी मुनी होत नाही व दिगंबर राहिल्याने कुणी तपस्वी होत नाही. तर समता धारण केल्याने श्रमण होतो, ब्रम्हचर्य धारण केल्याने ब्राम्हण होतो, ज्ञानाने मुनी होतो आणि तपश्चरणाने तपस्वी होतो.

महावीरांनी ईश्वरकर्तृत्व आणि ईश्वराचे वरदान नाकारले. कोणाही प्रेषिताच्या, ईश्वराच्या अथवा अधिकाऱ्याच्या आज्ञेनुसार व आदेशानुसार न जगता श्रद्धेची योग्य ती चिकित्सा करून शुद्ध ज्ञानाच्या कसोटीवर उतरणाऱ्या खरा देव, शास्त्र, गुरु व धर्म निवडण्याचे स्वातंत्र्य बहाल केले. म्हणून मूळ जैन संहितेत परंपरेने येणारे गुरूंचे कोणतेही पंथ,अथवा पदे प्राचीन काळात नव्हते. शुद्ध आगम हेच प्रमाण मानले. महावीरांनी अंधश्रद्धेला विरोध केला. हवालदील झालेल्या लोकांना सम्यक पुरुषार्थ सांगितला. कर्मानेच मनुष्य ब्राम्हण होतो, कर्मानेच तो क्षत्रिय होतो, कर्मानेच तो वैश्य होतो आणि शूद्रही कर्मानेच होतो, माणसाच्या चांगल्या वाईट कामानेच तो चांगला वाईट ठरतो हे पटवून दिले. माणसाचे ईश्वरावरील किंवा दैवी शक्तीवरील अवलंबन अमान्य करून मानवातील सुप्त सामर्थ्य प्रकट करण्याला मानवाला प्रवृत्त व समर्थ करण्याचे महान कार्य महावीरांनी केले. मनुष्याच्या अंतिम कल्याणाचे सर्वस्व माणसातच आहे या विचारला त्यांनी बळकट केले.

महावीरांची नीती सामाजिकतेवर भर देण्यापेक्षा व्यक्तीच्या पवित्र जगण्यावर व आंतरिक विकासावर भर देणारी होती. फार काळापासून चालत आलेल्या अनिष्ट परंपरा, अनिष्ट ग्रंथप्रामाण्य, अनिष्ट श्रुतीप्रामाण्य व रूढी यांना नाकारून महावीरांनी सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चारित्र या त्रयींच्या अनुषंगाने लोकांना चिकित्सक, बुद्धिनिष्ठ, अनेकांतवादी व आत्मप्रामाण्यवादी बनविले व विवेकी धर्माचा एकप्रकारे शुभारंभच केला. विवेकी धर्म हा अत्यंत उदार, समन्वयवादी, सहिष्णू असतो. पण आज महावीरांचे अनुयायी म्हणवून घेणारे आम्ही तुम्ही याच विवेकी धर्माला विशिष्ट पंथाच्या,परंपरांच्या अभिनिवेशामुळे निष्प्राण, जड आणि कुंठीत बनवत आहोत. प्रत्येकाच्या अंतरंगात वास करणाऱ्या भगवतसत्तेची अभिव्यक्ती करण्यासाठीच बाह्य साधने असतात. बाह्य साधनांना मर्यादा असतात.

धर्माची सांस्कृतिक प्रतीके अर्थात प्रतिमा, ध्वज, पुजेला वापरण्यात येणारे पदार्थ, हे सगळे भावशुद्धीसाठी कारण असतात म्हणून ती स्वीकारार्ह असतात. पण त्या गोष्टीतच धर्म शोधणे हे अडाणीपणाचे द्योतक असते. ती शुद्ध आणि अहिंसक असावीत एवढीच माफक अपेक्षा असते. साधनेच्या या भाऊगर्दीत आपण साध्यमूल्य विसरत गेलो. आत्म्याला परमात्मा बनविणे हे ध्येय आहे. याचा विसर पडत चाललाय. वैयक्तिक रागलोभ आणि अहंकाराने धर्माला आज अवकळा आलीय. धर्म कलह आणि संघर्ष कुठे शिकवतो? महावीरविचार आपल्यापासून कोसो दूर गेलाय असे अत्यंत दुर्दैवाने म्हणावे लागते. वैयक्तिक राग लोभ बाजूला ठेवून व स्वताची शांती न हरवता सम्यक विचारांच्या आदान -प्रदानाने कोणतीही समस्या सुटू शकते हा महावीरांचा अनेकांतवादी विचार आहे. तरच आपल्याला “महावीर” समजू शकेल. यावर आपण सगळे विचार कराल अशी आशा आहे.

ब्र. डॉ. वकील पाराज

(७७५६९१९१११)

~~~***~~~
~~~

पंचकल्याणक महोत्सवाचा आधुनिक जीवनावर परिणाम

पंचकल्याणक हा तीर्थंकरांच्या जीवनातील पाच प्रमुख टप्प्यांचा उत्सव आहे. जैन धर्मात या उत्सवाला आध्यात्मिक महत्त्व आहे. हे पाच टप्पे म्हणजेच पाच कल्याणक आहेत:

1. गर्भधारण (च्यवन)
2. जन्म (जन्म)
3. दीक्षा (संन्यास)
4. केवलज्ञान (सर्वज्ञान)
5. मोक्ष (निर्वाण)

या उत्सवांद्वारे तीर्थंकरांच्या आत्म्याचा सांसारिक जीवनातून अंतिम मुक्तीकडे प्रवास दर्शविला जातो. प्राचीन परंपरेशी जोडलेला पंचकल्याणक महोत्सव आजच्या काळातही सुसंगत राहून सामाजिक ऐक्य, सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन, आणि नैतिक मार्गदर्शन पुरवतो.

सामाजिक संवादाची संधी:

तंत्रज्ञान-प्रधान जीवनात, जिथे आभासी संपर्कावर भर आहे, पंचकल्याणक महोत्सव लोकांना प्रत्यक्ष भेटण्याची अर्थपूर्ण संधी उपलब्ध करून देतो. हा भव्य उत्सव विविध वयोगट, व्यवसाय, आणि पार्श्वभूमी असलेल्या लोकांना एकत्र आणून ऐक्य आणि बांधिलकीची भावना निर्माण करतो. उदाहरणार्थ, २०१२ साली निगडी पंचकल्याणक महोत्सवामध्ये हजारो भाविकांनी विधी, सार्वजनिक भोजन, आणि शोभायात्रांमध्ये सहभागी होऊन एकात्मतेचा अनुभव घेतला. अशा प्रसंगांमुळे विद्यमान नाती दृढ होतात आणि नवीन नात्यांचा पाया रचला जातो, ज्यामुळे एक सामूहिक आणि मजबूत सामाजिक नेटवर्क उभे राहते.

अर्थव्यवस्थेला चालना देण्याची संधी:

पंचकल्याणक महोत्सव स्थानिक अर्थव्यवस्थेवर सकारात्मक परिणाम करतो. मूर्ती, सजावट करणारे कारागीर, तसेच केटरिंग, कार्यक्रम व्यवस्थापन, आणि वाहतूक सेवा पुरवणाऱ्यांना रोजगाराच्या संधी मिळतात. स्थानिक व्यापारी, वस्त्रव्यवसायी, आणि आतिथ्य सेवा यांनाही मागणी वाढते.

उत्सवाच्या वेळी गोळा झालेल्या देणग्यांचा उपयोग शाळा, दवाखाने, आणि सामुदायिक केंद्रांसारख्या कल्याणकारी प्रकल्पांसाठी केला जातो. याशिवाय, या उत्सवांशी संबंधित पर्यटनामुळे स्थानिक व्यवसायांना चालना मिळते. यात्रेकरूंना राहण्याची, जेवणाची, आणि प्रवासाची गरज भासते, ज्यामुळे स्थानिक व्यवसायांना उत्पन्न मिळते. या आर्थिक घडामोडींमुळे सांस्कृतिक आणि आध्यात्मिक पायाभूत संरचनेवरही सकारात्मक परिणाम होतो.

जैन तत्वज्ञानाचा प्रचार आणि अहिंसेचा संदेश:

पंचकल्याणक महोत्सवातील शिकवण उपभोगवाद, संघर्ष, आणि पर्यावरण या सारख्या समकालीन समस्यांवर उपाय सुचवते. अहिंसा आणि अपरिग्रह यांसारख्या जैन तत्वांवर आधारित कार्यशाळा लोकांना नैतिक आणि शाश्वत जीवनशैली स्वीकारण्यास प्रोत्साहन देतात.

या महोत्सवात भरवलेल्या शैक्षणिक प्रदर्शनांद्वारे जैन तत्वज्ञानाचा आधुनिक काळासाठी अर्थ लावला जातो, ज्यामुळे तरुण पिढीलाही ते समजणे सोपे होते. उदाहरणार्थ, अहिंसेच्या माध्यमातून पर्यावरणीय संरक्षणावर दिलेला भर हा जागतिक हवामान बदलाशी लढण्याच्या प्रयत्नांशी सुसंगत आहे.

सांस्कृतिक कौशल्य प्रदर्शित करण्याची संधी:

पंचकल्याणक महोत्सव हा कला आणि संस्कृतीचा उत्सवही आहे. स्तवन (भक्तिगीते), नाटके, आणि प्रदर्शनांद्वारे सहभागी जैन परंपरा जपत स्वतःच्या सर्जनशीलतेचे प्रदर्शन करू शकतात. या महोत्सवात सहभागी भगवान महावीरांच्या जीवनावर आधारित नाटके सादर करू शकतात, जिथे ऐतिहासिक कथा आधुनिक कथन पद्धतींशी जोडल्या जातात.

दानशूरवृत्तीचा विकास:

पंचकल्याणक महोत्सवाचा विशेष पैलू म्हणजे समाजासाठी नि:स्वार्थ भावनेने केलेले दान. या महोत्सवात स्वयंसेवक रक्तदान शिबिरे, मोफत आरोग्य तपासणी, आणि गरजू कुटुंबांना अन्न व कपडे वाटप यांसारखे उपक्रम राबवितात.

निष्कर्ष:

पंचकल्याणक महोत्सव हा केवळ धार्मिक उत्सव नसून सांस्कृतिक, आर्थिक, नैतिक, आणि मानवीय स्तरांवर समाजावर परिणाम करणारा बहुउद्देशीय कार्यक्रम आहे. तो सामाजिक संवाद, आर्थिक प्रगती, आणि गहन आध्यात्मिक शिकवणींचा प्रसार करतो.

परंपरेला आधुनिक काळाशी जोडून, पंचकल्याणक महोत्सव ऐक्य, शाश्वतता, आणि करुणा यांना प्रोत्साहन देतो, आणि जैन तत्वज्ञानाच्या शाश्वत मूल्यांद्वारे आजच्या जगाला संतुलित आणि प्रबुद्ध समाजाच्या दिशेने नेतो..

सौ. शुभांगी भोकरे

~~~***~~~
~~~

८. आभार

आम्हाला खात्री आहे की आपण सर्व या महान उत्सवाचे साक्षीदार आहात, पंचकल्यानक महापुजा. हा भव्य कार्यक्रम च लोकांनी शक्य केला होता.

समिती आणि विविध उपसमित्यांनी केलेल्या दृष्टी आणि नियोजनासह प्रारंभ करण्यासाठी, त्यांचे योगदान पोस्ट आणि या कार्यक्रमादरम्यान हा कार्यक्रम यशस्वीपणे आयोजित करण्यासाठी मुख्य मोहीम होती. आम्ही, समाजाच्या वतीने, त्यांच्या अथक योगदानाचे आभार आणि सलाम करतो.

सर्व गट आणि व्यक्तींनी विविध क्रियाकलापांमध्ये त्यांच्या असंख्य योगदानाबद्दल आभार मानण्याचे विशेष कार्य. सर्व उत्साहाने वीर सेवा दल प्रत्येक बाबतीत मदत केली. महिला मंडळ आणि इतर बऱ्याच स्थानिक संस्थांसह छोट्या गटांची संख्या उत्सवांमध्ये एक विशेष वर्ण आणि रंग जोडली. त्यांच्या प्रयत्नांबद्दल मी मनापासून कौतुक करतो.

आम्ही सर्व देणगीदारांच्या उदार देणग्यांबद्दल आभार मानू इच्छितो. या कार्यक्रमात इंद्र, अष्टकुमारिका इत्यादी विविध भूमिकांमध्ये भाग घेणाऱ्यांचे विशेष कार्य आणि वेळ आणि आर्थिक सहाय्य दोन्ही देते.

हे लक्षात घेतले पाहिजे की राजकीय, प्रशासकीय आणि धार्मिक संस्थांमधील मोठ्या व्यक्तिमत्त्वांच्या संख्येने आम्हाला हे देखील यशस्वी करण्यात पाठिंबा दर्शविला. आम्ही त्यांचे मनापासून आभार मानतो.

अन्न, मंडप, ध्वनी आणि व्हिडिओ सिस्टम, लॉजिस्टिक्स, स्टॉल्स, धार्मिक क्रियाकलाप आणि इतरांसह विक्रेत्यांची संख्या त्यांच्या प्रामाणिक सहभागाने या कार्यक्रमास मोठे यश मिळवून दिली.

आणि शेवटी, सर्व लोकांच्या सहभागासाठी आणि समर्थनाबद्दल आभार मानण्याचे विशेष कार्य. यादी इतकी मोठी असल्याने आम्ही कोणत्याही वैयक्तिक नावांचा उल्लेख करणे टाळले आहे. आम्हाला खात्री आहे की हे घडवून आणण्यासाठी दिवस-रात्र काम करणाऱ्या ५०० हून अधिक व्यक्ती असतील.

पुन्हा एकदा आम्ही प्रत्येकाचे आणि सर्वांचे आभार मानतो.

समस्त स्मरणिका संपादक मंडळ

पंचकल्याणाक महामोहोत्सव समिती

श्री भगवान महावीर अहिंसा ट्रस्ट

1	**अध्यक्ष अजित पाटील (9922439251)**
2	**उपाध्यक्ष श्री विरेंद्र जैन (9822098176)**
3	**सचिव श्री उमेश पाटील (9422325189)**
4	**सदस्य श्री सुदिन खोत (9822017232)**
5	**सदस्य श्री शांतिनाथ पाटील (9922902358)**
6	**सदस्य श्री धनंजय चिंचवाडे (8888827621)**
7	**सदस्य श्री अरुण चौगुले (9850646370)**
8	**सदस्य श्री वर्धमान पांडे (9960810077)**
9	**सदस्य श्री अशोक नांदणीकर (9011022585)**

मार्गदर्शक

1	मा श्रीरंग आप्पा बारणे खासदार
2	मा श्री अण्णा दादू बनसोडे आमदार
3	श्री अमितजी गोरखे आमदार
4	मा सौ मंगलाताई कदम मा महापौर
5	मा श्री आजम भाई पानसरे मा महापौर
6	मा श्री संजोगजी वाघेरे मा महापौर
7	मा श्री आर एस कुमार मा महापौर
8	मा सौ शैलजाताई मोरे मा उपमहापौर
9	मा श्री राजूजी मिसाळ मा उपमहापौर
10	मा श्री मोरेश्वरजी भोंडवे मा नगरसेवक
11	मा सौ शर्मिलाताई बाबर मा नगरसेविका
12	मा सौ सीमाताई साबळे मा नगरसेविका
13	मा श्री अमितजी गावडे मा नगरसेवक
14	मा श्री राजेंद्रजी बाबर उद्योजक

सुकाणू समिती

1	मा. मिलिंदजी फडे (9823082296)
2	मा अजित पाटील (9922439251)
3	श्रीमती सुजाता शाह (9822027336)
4	वीरकुमार शाह (9371221365)
5	सुदीन खोत (9822017232)
6	विरेंद्र जैन (9822098176)
7	शांतिनाथ पाटील (9922902358)
8	धनंजय चिंचवाडे (8888827621)
9	प्रकाश शेडबाळे (9881090768)
10	उमेश पाटील (8149059144)
11	विजय भिलवडे (9890631451)
12	सुरगोंडा पाटील (9225638088)

अर्थ व बजेट समिती

1	श्री विरेंद्र जैन
2	श्री विवेक काला

पंचकल्याणाक महामोहोत्सव समिती

स्वागत समिती

1	श्री अजित पाटील (9922439251)
2	श्री सुदिन खोत (9822017232)
3	श्री शांतिनाथ पाटील (9922902358)
4	श्री प्रितेश दोशी (8554995630)
5	श्री धनंजय चिंचवाडे (8888827621)
6	श्री प्रकाश शेडबाळे (9881090768)
7	श्री सचिन कोगनोळे (7021124482)
8	सौ सुरेखा पाटील (9767482462)
9	सौ पूजा खोत (9689895539)
10	सौ अलका चिंचवाडे (9623452735)
11	सौ माधवी शेडबाळे (9850296496)

सांस्कृतिक समिती

1	श्री सुनील खोत (9870405522)
2	सौ स्नेहल बसन्नावर (8087031605)
3	सौ शुभांगी पाटील (9921802047)
4	सौ स्मृती चौधरी (9970775709)
5	श्री जयकुमार कूल (9970301143)
6	श्री शुभम कुंभोजे (8087131008)
7	श्री स्वप्निल पाटील (9272172316)
8	सौ स्वाती शिरगुप्पे (814950809)

कलश आवंटन समिती

1	सौ सरिता जैन (9881272487)
2	श्री नेमिचंद पाटील (9850536017)
3	श्री महावीर पाटील (9890764602)
4	श्री दादासाहेब पाटील (9371000485)
5	श्री अजित माणगावकर (9168246969)
6	सौ वैशाली पाटील (9921638096)
7	श्री चंद्रदीप जैन (9860978445)
8	श्री शांतिनाथ पाटील (9579475367)
9	श्री बाहुबली हुळ्ळे (9960812974)
10	श्री जीवन सौंदत्ते (9763610912)
11	श्री राजू बेले (9763900393)
12	श्री निनाद शहा (9860774491)
13	श्री पद्माकर अंबुरे (9096716795)
14	सौ प्रभा पाटील (7020244495)
15	सौ सुमन पाटील (9890764602)
16	सौ स्वाती केस्ती (7083939945)
17	सौ कुमुद चौगुले (9579414059)
18	सौ ललिता निटवे (7083611481)
19	श्री अभिजीत पाचोरे (9511679956)
20	श्री शुभम सकळे (8855996003)

त्यागी आहार विहार व निवास समिती

1	सौ वंदना अजमेरा (7447306491)
2	सौ सरिता पाटील (9922902357)
3	सौ भारती शहा (9766653425)
4	सौ पल्लवी अम्मण्णवर (9975573787)
5	श्री प्रतीक ढोले (7798868796)
6	श्री विशाल पाटील (9970349372)
7	श्री रोहित जैन (9561234081)
8	श्री सागर जैन (9632484494)

प्रिंटिंग समिती

1	श्री महावीर चौगुले (9822141312)
2	श्री प्रशांत उपाध्ये (9834980128)
3	श्री अमोल शिरगावे (9960166440)
4	श्री नितेश रोटे (9657566468)
5	श्री मयूर संचेती (9011490491)

पंचकल्याणाक महामोहोत्सव समिती

मिरवणूक समिती

1	श्री विजय भिलवडे (9890631451)
2	श्री अनुराज बुकशेटे (9850718833)
3	श्री सचिन हुपरे (8087448821)
4	श्री विकास नवले (9763847762)
5	श्री अमोल शिरगावे (9960166440)
6	श्री स्वप्निल पाटील (9272172316)
7	श्री वर्धमान शिरोटे (8856017905)

मौजी बंधन समिती

1	सौ पद्मजा खोत (8850130631)
2	सौ सुरेखा पाटील (8530732469)
3	सौ पूजा खोत (9689895539)
4	सौ प्रतिभा देसाई (9823931825)

स्टेज सजावट व मंडप समिती

1	श्री संजय नाईक (9657002439)
2	श्री विक्रम चौगुले (9850626463)
3	श्री रोहित जैन (9561234081)
4	श्री रोहन सकळे (8273592397)
5	श्री आकाश पाटील (7020021434)
6	श्री अक्षय आहेरकर (9823613787)
7	श्री प्रमोद सरडे (9860851022)

वीर बाल संस्कार पाठशाला

1	सौ शुभांगी पाटील (9921802047)
2	सौ सरिता वाखरे (8669394173)
3	सौ अश्विनी भंडारी (8625097947)
4	सौ सुनिता काळे (9881331840)
5	श्री शुभम कुंभोजे (8087131008)
6	श्री स्वप्निल पाटील (9272172316)

पूजा समिती

1	सौ पल्लवी अम्मण्णवर (9975573787)
2	सौ सरिता पाटील (9922902357)
3	सौ स्वाती शिरगुप्पे (8149508091)
4	सौ रेणुका पाटील 8888870673)
5	सौ मेघना चौगुले (हुपरी) (7249551008)
6	श्री महावीर पाटील (9730354530)
7	श्री प्रथमेश खोत (7276290212)
8	सौ अंजना चौगुले (985099646)

वैद्यकीय समिती

1	डॉक्टर श्री अमित पांडे (9860918000)
2	डॉक्टर सौ नेहा पांडे (9833444563)
3	डॉक्टर श्री गिरीराज गांधी (9850304808)

सूत्र संचालन समिती

1	सौ स्वाती शिरगुप्पे (8149508091)
2	सौ शुभांगी पाटील (9921802047)

देखभाल व स्वयंसेवक समिती

1	श्री शुभम कुंभोजे (8087131008)
2	श्री अरिहंत गिरमल (9923908108)
3	श्री प्रमोद पाटील (9372705826)
4	वीर सेवा दल

पोलिस संरक्षण व परवानगी समिती

1	श्री विद्याधर हुंडेकर (9226769466)
2	श्री पद्माकर अंबुरे (9096716795)
3	श्री विनोद वठारे (9860017172)

पंचकल्याणाक महामोहोत्सव समिती

कार्यालय व भांडार समिती

1	श्री विद्याधर हुंडेकर (9226769466)
2	श्री पद्माकर अंबुरे (9096716795)
3	श्री निनाद शहा (9860774491)

प्रचार व प्रसिद्धी समिती

1	श्री प्रकाश शेडबाळे (9881090768)
2	श्री धनंजय पाटील (9923663214)
3	श्री सौरभ आलासे (7447480108)
4	श्री विनोद वठारे (9860017172)
5	श्री अमित शेडबाळे (7038438680)

कुरियर व लॉजिस्टिक समिती

1	श्री सुरगोंडा पाटील (9225638088)
2	श्री अमोल बळोल (9922927252)

निवास समिती

1	श्री विनोद वठारे (9860017172)
2	श्री स्वप्निल पाटील (9272172316)
3	श्री अक्षय शहरकर (9850967090)
4	श्री अविरत पाटील (8983231008)
5	श्री अरिहंत बिरनाळे (86248 49621)

बॅचेस बॅनर समिती

1	श्री अमोल शिरगावे (9960166440)
2	श्री धनंजय पाटील (9923663214)
3	श्री सचिन हुपरे (8087448821)
4	श्री विकास नवले (9763847762)
5	श्री सुहास पाटील (9822349983)
6	श्री विनोद डोर्ले (9421225632)
7	श्री मोती वनकुद्रे (9822440280)
8	श्री वैभव काकरंबे (9922437830)

भोजन समिती

1	श्री उमेश पाटील (8149059144)
2	श्री सुरगोंडा पाटील (9225638088)
3	श्री आदिनाथ खोत (9405852705)
4	श्री अमोल बळोल (9922927252)
5	सौ सारिका शेटे (9822042954)
6	सौ स्वप्नाली भिलवडे (7972263766)
7	सौ मंगल शहा (8830226199)
8	सौ सुप्रिया पाटील (8975170329)
9	सौ पद्मश्री खोत (9881033070)
10	श्री दिनेश नागावकर (9822008527)
11	श्री प्रवीण पाटील (9673719797)

स्मरणिकां समिती

1	श्री धनंजय चिंचवाडे (8888827621)
2	श्री सुदिन खोत (9822017232)
3	श्री शांतिनाथ पाटील (9922902358)
4	प्रा श्री अजय फुलंबरकर (9822567832)
5	श्री सौरभ आलासे (7447480108)
6	प्रा.श्री प्रकाश उखळकर (9975020069)
7	श्री सचिन कोगनोळे (7021124482)
8	श्री शरद अलासे (9881734140)
9	श्री अविनाश भोकरे (9975498229)
10	श्री विनोद डोर्ले (9421225632)

डॉक्युमेंटरी समिती

1	श्री सौरभ अलासे
2	श्री सचिन कोगनोळे

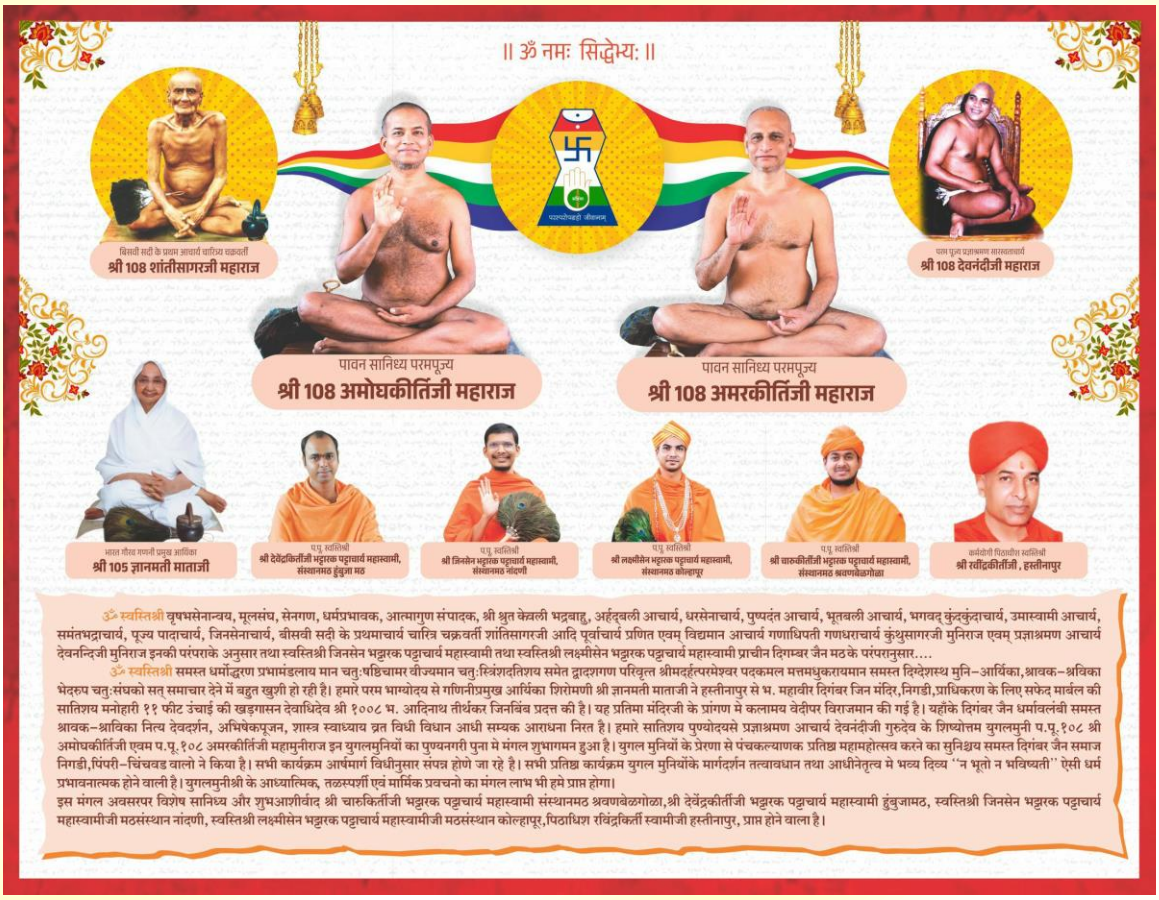

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

बिसवी सदी के प्रथम आचार्य चारित्र्य चक्रवर्ती
श्री 108 शांतीसागरजी महाराज

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य
श्री 108 देवनंदीजी महाराज

पावन सानिध्य परमपूज्य
श्री 108 अमोघकीर्तिजी महाराज

पावन सानिध्य परमपूज्य
श्री 108 अमरकीर्तिजी महाराज

भारत गौरव गणनी प्रमुख आर्यिका
श्री 105 ज्ञानमती माताजी

प.पू. स्वस्तिश्री
श्री देवेंद्रकिर्तीजी भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी,
संस्थानमठ हुंबुजा मठ

प.पू. स्वस्तिश्री
श्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी,
संस्थानमठ नांदणी

प.पू. स्वस्तिश्री
श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी,
संस्थानमठ कोल्हापूर

प.पू. स्वस्तिश्री
श्री चारुकीर्तीजी भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी,
संस्थानमठ श्रवणबेळगोळा

कर्मयोगी पिठाधीश स्वस्तिश्री
श्री रवींद्रकीर्तीजी , हस्तीनापुर

ॐ स्वस्तिश्री वृषभसेनान्वय, मूलसंघ, सेनगण, धर्मप्रभावक, आत्मागुण संपादक, श्री श्रुत केवली भद्रबाहु, अर्हद्बली आचार्य, धरसेनाचार्य, पुष्पदंत आचार्य, भूतबली आचार्य, भगवद् कुंदकुंदाचार्य, उमास्वामी आचार्य, समंतभद्राचार्य, पूज्य पादाचार्य, जिनसेनाचार्य, बीसवी सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागरजी आदि पूर्वाचार्य प्रणित एवम् विद्यमान आचार्य गणाधिपती गणधराचार्य कुंथुसागरजी मुनिराज एवम् प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनन्दिजी मुनिराज इनकी परंपराके अनुसार तथा स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी तथा स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी प्राचीन दिगम्बर जैन मठ के परंपरानुसार....

ॐ स्वस्तिश्री समस्त धर्मोद्धरण प्रभामंडलाय मान चतु:षष्ठिचामर वीज्यमान चतु:स्त्रिंशदतिशय समेत द्वादशगण परिवृत्त श्रीमदर्हत्परमेश्वर पदकमल मत्तमधुकरायमान समस्त दिग्देशस्थ मुनि-आर्यिका,श्रावक-श्रविका भेदरुप चतु:संघको सत् समाचार देने में बहुत खुशी हो रही है। हमारे परम भाग्योदय से गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणी श्री ज्ञानमती माताजी ने हस्तीनापुर से भ. महावीर दिगंबर जिन मंदिर,निगडी,प्राधिकरण के लिए सफेद मार्बल की सातिशय मनोहारी ११ फीट उंचाई की खड्गासन देवाधिदेव श्री १००८ भ. आदिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्रदत्त की है। यह प्रतिमा मंदिरजी के प्रांगण मे कलामय वेदीपर विराजमान की गई है। यहाँके दिगंबर जैन धर्मावलंबी समस्त श्रावक-श्राविका नित्य देवदर्शन, अभिषेकपूजन, शास्त्र स्वाध्याय व्रत विधी विधान आधी सम्यक आराधना निरत है। हमारे सातिशय पुण्योदयसे प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदीजी गुरुदेव के शिष्योत्तम युगलमुनी प.पू.१०८ श्री अमोघकीर्तिजी एवम प.पू.१०८ अमरकीर्तिजी महामुनीराज इन युगलमुनियों का पुण्यनगरी पुना मे मंगल शुभागमन हुआ है। युगल मुनियों के प्रेरणा से पंचकल्याणक प्रतिष्ठ महामहोत्सव करने का सुनिश्चय समस्त दिगंबर जैन समाज निगडी,पिंपरी-चिंचवड वालो ने किया है। सभी कार्यक्रम आर्षमार्ग विधीनुसार संपन्न होणे जा रहे है। सभी प्रतिष्ठ कार्यक्रम युगल मुनियोंके मार्गदर्शन तत्वावधान तथा आधीनेतृत्व मे भव्य दिव्य "न भूतो न भविष्यती" ऐसी धर्म प्रभावनात्मक होने वाली है। युगलमुनीश्री के आध्यात्मिक, तळस्पर्शी एवं मार्मिक प्रवचनो का मंगल लाभ भी हमे प्राप्त होगा।

इस मंगल अवसरपर विशेष सानिध्य और शुभआशीर्वाद श्री चारुकिर्तीजी भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी संस्थानमठ श्रवणबेळगोळा,श्री देवेंद्रकीर्तीजी भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी हुंबुजामठ, स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामीजी मठसंस्थान नांदणी, स्वस्तिश्री लक्ष्मीसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामीजी मठसंस्थान कोल्हापूर,पिठाधिश रविंद्रकिर्ती स्वामीजी हस्तीनापुर, प्राप्त होने वाला है।